प्रियंवद

आधे रुपए वाली चप्पल

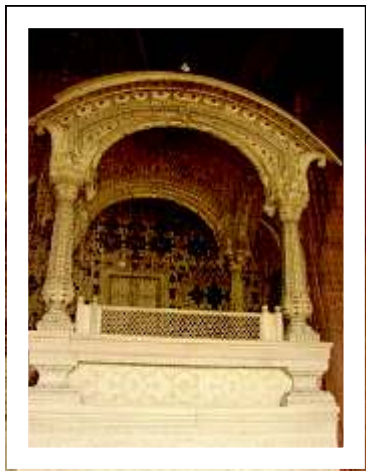

इतिहास पढ़ने का एक फायदा यह भी है कि यह जीवन की कठिनाइयों और उलझनों को समझने के बहुत से सूत्र हमें देता रहता है। ये सूत्र उन व्यक्तियों के जीवन और सामाजिक घटनाओं में होते हैं जिन्होंने इतिहास बनाया होता है। मुगल सम्राट शाहजहाँ से जुड़ी इसी तरह की एक घटना को मैं कभी नहीं भूलता।

इतिहास की किसी भी घटना पर विश्वास करने के लिए उसकी प्रामाणिकता को देखना ज़रूरी होता है। उस सूचना का स्रोत क्या है, कितना विश्वसनीय है, इसकी जाँच किए बगैर किसी भी बात पर यकीन नहीं आता। इसीलिए इस घटना को बताने से पहले इसके स्रोत के बारे में जाँच करना ज़रूरी है।

निकोलाओ मनूसी (Niccolao Manucci) ने एक पुस्तक *A Pepys of mogul india - 1653AD-1708AD* लिखी थी। वेनिस में रहने वाला मनूसी 1653 में घर से भाग गया था। उस वक्त उसकी उम्र चौदह साल थी। एक समुद्री जहाज़ में छिपकर वह फारस और फिर भारत आया। जहाज़ में ही उसे बैलोमोन्ट नाम के एक उच्च पद के व्यक्ति ने शरण दी। अपने साथ रखा। मनूसी उसी के साथ भारत आया। 1656 में बैलोमोन्ट की अचानक मृत्यु हो गई। मनूसी बिल्कुल अकेला हो गया। किसी तरह वह शाहजहाँ के सबसे बड़े लड़के दाराशिकोह की फौज में सिपाही के तौर पर भरती हो गया। 1659 में दारा की मृत्यु तक मनूसी उसके साथ यहाँ-वहाँ भागता रहा। दारा की मृत्यु के बाद मनूसी ने औरंगज़ेब की सेवा में आने से इंकार कर दिया और चिकित्सक का पेशा अपना लिया। जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखने, देश भर में घूमने और मुगल बादशाहों के दरबार में पहुँच रखने के कारण मनूसी के वर्णन प्रामाणिक माने जाते हैं। इसी मनूसी ने एक घटना का वर्णन किया है जब औरंगज़ेब ने शाहजहाँ को आगरे के लालकिले में कैद कर लिया था। मनूसी लिखता है...

...कई बार किले के अन्दर जाने से मुझे लगा कि शाहजहाँ की कैद बताए जाने से कहीं अधिक सख्त है। कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता था जब कि हम अन्य लोगों के साथ गवर्नर (एतबार खाँ) से बात कर रहे हों और खोजा उसके कान में फुसफुसाकर यह न बताते हों कि शाहजहाँ ने क्या कहा या क्या किया। खोजा यह भी बताते थे कि बीबियों, अन्य स्त्रियों व वादियों में क्या बातें हो रही हैं। अक्सर गवर्नर मुस्कराकर अपने मिलने वालों को भी खोजाओं की बातें तथा अन्दर की घटनाओं के बारे में बताता था। साथ ही वह शाहजहाँ के लिए गालियाँ भी जोड़ देता था। वह केवल इतने से ही सन्तुष्ट नहीं होता था। कभी-कभी वह यह भी दिखा देता था कि वह शाहजहाँ से एक दयनीय गुलाम की तरह बर्ताव करता है।

एक बार एक खोजा उसके पास आया और बताने लगा कि शाहजहाँ को एक पापोश की ज़रूरत है। पापोश बिना एड़ी की चप्पल होती है जिसे आमतौर पर मुसलमान पहनते हैं। गवर्नर ने चप्पलें मँगवाईं। व्यापारियों ने कई चप्पलें दिखाईं। कुछ आधे रुपए कीमत की चमड़े की थीं, कुछ सादे मखमल की थीं, कुछ ज़री के काम वाली थीं। कुछ लगभग 8 रुपए कीमत की थीं जो शाहजहाँ जैसे बादशाह के लिए बहुत मामूली कीमत थी, चाहे वह जेल में ही क्यों न हों। पर गवर्नर ने शाहजहाँ को आधे रुपए वाली चमड़े की चप्पल ही भेजी, न 8 रुपए वाली, न 4 रुपए वाली और न ही 2 रुपए वाली। फिर वह इस तरह मुस्कुराया मानो उसने बहुत कमाल का काम कर दिया हो।

यह वही शाहजहाँ था जिसने कहते हैं कि बेटी जहाँआरा को सूरत की पूरी दीवानी सिर्फ पान-खर्च के लिए दे दी थी। जिसके पास कोहिनूर था, तख्ते-ताऊस था और जिसने ताजमहल और दिल्ली का लालकिला बनवाया था। उसके एक गुलाम ने उसे 2 रुपए के जूते के लायक भी नहीं समझा। चकमक